लोककथाओं का एक कथाभिप्राय : प्राणों की अन्यत्र स्थिति

✧ डॉ. यशवन्त सिंह

'लोककथा' शब्द सामान्यतः उन लोकप्रचलित कथानकों के लिये व्यवहृत होता रहा है, जो मौखिक या लिखित परम्परा में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को प्राप्त होते रहें हैं। हिन्दी साहित्य कोश के अनुसार–"लोक में प्रचलित और परम्परा से चली आने वाली मूलतः मौखिक रूप में प्रचलित कहानियाँ लोक–कहानियाँ कहलाती हैं।" (1) निमाड़ी लोकवार्त्ताविद् श्री राम नारायण उपाध्याय के मत से "लोककथाओं" में मानव–मन का सुकोमल इतिहस अंकित रहता है। आदमी ने (अपने वाह्‌य जगत में) जो कुछ किया, उसका लेखा–जोखा तो इतिहास में आ जाता है, लेकिन अपने मनोजगत में उसने जो कुछ भी सोचा–विचारा, रंगीन कल्पनाएँ बुनी, सुन्दर सपने सजाये उन सबका विवरण इन कथाओं में सुरक्षित है।" (2)

लोकथाओं में बार–बार व्यवहृत होने वाले एक जैसे तत्व 'कथाभिप्राय' कहलाते हैं। कथाभिप्राय लोककथाओं के लघुतम रूप, असाधारण तत्व, असाधारण घटनाएँ, साँचे में ढले हुए विचार, केन्द्रीय विचार, मूलभाव, अदभुत एवं विलक्षण चरित्र तथा वस्तुएँ होती हैं। 'डिक्शनरी ऑफ वर्ल्ड लिटरेचर' में कथाभिप्राय का परिचय इस तरह मिलता है–"अभिप्राय कहानी का सबसे छोटा, किन्तु स्पष्ट पहचान में आने वाला वह तत्व है जो अपने आप में एक कहानी तैयार कर देता है।" (3) पेंजर ने कथाभिप्रायों को 'घटना' कहा है, उनके अनुसार कथाभिप्राय का अर्थ कथा में बार–बार प्रयुक्त होने वाले ऐसे अभिप्रायों से है, जो किसी छोटी घटना (इन्सीडेंट) अथवा विचार (आइडिया) के रूप में कथा के निर्माण और उसे आगे बढ़ाने में योग देने वाले तत्व होते हैं। (4)

'प्राणों की अन्यत्र स्थिति' भारतीय कथाओं का बहुत ही लोक प्रचलित कथाभिप्राय है। प्राण या जीव शरीर को छोड़कर जिस किसी वस्तु या प्राणी में निवास करता है उसे 'जीवन–निमित्त–वस्तु' अथवा 'प्राण–प्रतीक' (स्पमि.प्दकमग) कहा जाता है, इसीलिए इस कथाभिप्राय को जीवन–निमित्त–वस्तु या प्राण–प्रतीक के नाम से भी जाना जाता है। पेंजर ने इसे 'बाहरी–आत्मा' (External Soul) (5) का अभिप्राय नाम दिया है। आदिम मानव का यह भी विश्वास था कि जब तक प्राण शरीर से अलग रहकर या शरीर के ही किसी विशेष अंग में सुरक्षित है, तब तक मनुष्य अच्छी तरह से रह सकता है। प्राण को चोट पहुँचाने से ही शरीर को चोट पहुँच सकती थी अथवा प्राण नष्ट होने पर ही मृत्यु संभाव्य थी। दूसरे शब्दों में इसे यों कहा जा सकता है कि जब प्राण दुखी होता था तभी मनुष्य भी दुखी होता था और उसके नष्ट होते ही मृत्यु हो जाती थी।

इस कथाभिप्राय से सम्बन्धित कथाओं की परम्परा महाभारत, कथासरित्सागर, रामचरितमानस में प्राप्त होती है। 'महाभारत' में वर्णित एक कथा के अनुसार– 'प्राचीन काल में बालधि नाम के एक शक्तिशाली मुनि थे। उन्होंने पुत्र शोक से संतप्त होकर अत्यन्त कठोर तपस्या की, जिसका उद्‌देश्य देवोपम पुत्र प्राप्त करना था। अपनी इस अभिलाषा के अनुसार बालधि को देवताओं की कृपा अवश्य प्राप्त हुई परन्तु देवों ने उनके पुत्र को देव–तुल्य नहीं बनाया और वरदान देते हुए कहा कि मरणधर्मा मनुष्य कभी देवता के समान अमर नहीं हो सकता। अतः उसकी आयु निमित्त (कारणों) अधीन होगी। इस पर बालधि बोले कि हे देववरों जैसे ये पर्वत सदा अक्षय भाव से खड़े रहते हैं, वैसे ही मेरा पुत्र भी सदा अक्षय बना रहे। ये पर्वत ही उसकी आयु के निमित्त हों अर्थात् जब तक यह पर्वत यहाँ बने रहें तब तक मेरा पुत्र भी जीवित रहे। तदनन्तर बालधि के यहाँ पुत्र का जन्म हुआ जो मेधायुक्त होने के कारण मेधावी नाम से विख्यात था। वह स्वभाव का बड़ा क्रोधी था। अपनी आयु के विषय में देवताओं के वरदान की बात सुनकर मेधावी घमण्ड में भर गया और ऋषियों का अपमान करने लगा। इतना ही नहीं वह ऋषि–मुनियों को सताने के उद्‌देश्य से ही इस पृथ्वी पर सब ओर बिचरा करता था। एक दिन मेधावी महान् शक्तिशाली एवं मनीषी धनुषाक्ष के पास जा पहुँचा और उनका तिरस्कार करने लगा। तब तपोबल सम्पन्न ऋषि धनुषाक्ष ने उसे शाप देते हुए कहा कि तू जलकर भस्म हो जा। परन्तु इस शाप का मेधावी पर कोई असर नहीं पड़ा। शक्तिशाली धनुषाक्ष ने ध्यान में देखा कि मेधावी रोग एवं मृत्यु से रहित है, तब उन्होंने उसकी आयु के निमित्त–भूत पर्वतों को भैंसों द्वारा विदीर्ण करा दिया। निमित्त–रूपी पर्वतों का नाश होते ही उस मुनिकुमार मेधावी की सहसा मृत्यु हो गयी।' (6) यह कथा जीवन–निमित्त के शरीर के बाहर जड़–पदार्थों में स्थित होने का उदाहरण है।

'कथासरित्सागर' की एक कथा के अनुसार, 'उज्जयिनी में महेन्द्रवर्मन का प्रपौत्र महासेन नाम का एक राजा था, जो दुर्गा की प्रचण्ड तपस्या करने के कारण चण्डमहासेन के नाम से जाना जाता था। एक दिन राजा चण्डमहासेन शिकार के लिए जंगल गया, जहाँ उसने एक शूकर पर बाण चलाये किन्तु उनके बाणों का शूकर पर कोई प्रभाव नही पड़ा। शूकर दौड़कर एक गुफा में प्रविष्ट हो गया, राजा ने उसका पीछा किया, चलते–चलते

एक शहर में पहुँचा और एक झील के किनारे बैठ गया। वहाँ उसने एक सुन्दरी को देखा, जिसने उसे बतलाया कि वह शूकर वास्तव में एक राक्षस है, अब वह अपनी गुफा में विश्राम कर रहा है, किन्तु नींद से जागते ही वह तुम्हें खा जायेगा। इस सुन्दरी का नाम अंगारवती था, जो उसी राक्षस की पुत्री थी। वह चण्डमहासेन से प्रेम करने लगी। चण्डमहासेन के कहने पर उसने अपने पिता से उसकी मृत्यु का रहस्य पूछा। उस असुर ने उत्तर दिया कि मेरा सारा शरीर वज्र का है, केवल मेरे बायें हाथ में एक छिद्र सुरक्षित नहीं है, किन्तु उसे मैं धनुष से सुरक्षित रखता हूँ। चण्डमहासेन ने राक्षस के बायें हाथ पर स्थित उस छिद्र पर प्रहार किया जिससे उसकी मृत्यु हो गयी। असुर की मृत्यु के बाद उसने अंगारवती से विवाह कर लिया।' (7) यहाँ पर राक्षस के बायें हाथ में स्थित एक छिद्र को 'प्राणमय अंग' माना गया है।

लोककथाओं में, इस कथाभिप्राय का प्रयोग प्रायः 'उजाड़ नगर में राक्षस और सुन्दरी' की रूढ़ि के साथ कथा को आगे बढ़ाने वाले अभिप्राय के रूप में प्रयुक्त होता है। जिसमें एक जादूगर, दानव अथवा परीदेश का कोई जीव अविजेय और अमर होता है, क्योंकि वह अपनी आत्मा (प्राण या जीव) को किसी गुप्त स्थान में सुरक्षित रखता है लेकिन एक सुन्दर राजकुमारी जिसे वह अपने महल में कैद रखता है, उससे गुप्त स्थान का पता पूछकर नायक को बतला देती है। नायक अनेक कठिनाइयों को पार करते हुए उस गुप्त स्थान से प्राण–प्रतीक वस्तु, जिसमें उस अविजेय जीव की आत्मा रखी होती है, को प्राप्त कर लेता है, जिसको नष्ट करके उस अमर जीवन को समाप्त कर देता है और राजकुमारी को प्राप्त कर लेता है। स्वयं संग्रहीत 'डाइन की कथा' (8) में एक डाइन मोहिनी वेश धारण करके राजा की आठवीं रानी बनकर महल में आती है और षडयंत्र करके राजा की सातों रानियों को निष्कासित करवा देती है। इन्हीं रानियों में से छोटी रानी का पुत्र दरबार में पहुँचता है। डाइन उसको पहचान देती है और मारने के लिए मृत्यु–पत्र के साथ उसको अपने देश में भेजती है। लेकिन रास्ते में साधु द्वारा मृत्यु–पत्र बदल देने के कारण वहाँ डाइन की माता और भाई राजकुमार को डाइन का पुत्र समझकर स्नेह से रखते हैं। एक दिन डाइन के भाई से पूछने पर वह बताता है कि सात समुद्र पार एक बरगद के वृक्ष पर दो पिंजड़े टंगे हुए हैं, जिनमें से एक में तोता है जिसमें उसके प्राण है तथा दूसरे में मुर्गी है जिसमें डाइन के प्राण हैं। राजकुमार तोते को मारकर तथा मुर्गी का पिंजड़ा लेकर साधु के पास पहुँचता है। साधु को साथ लेकर राजकुमार दरबार में जाकर राजा के समक्ष मुर्गी को मारकर डाइन की वास्तविकता प्रकट कर देता है।'

स्वयं संग्रहीत 'अंधरी का बेटा' (9) बुन्देली लोककथा में 'राजा बाजार से राक्षसी की मूर्ति खरीदता है, जो राजा की तीनों रानियों की आँखें निकलवाकर उन्हें कुअे में फिकवा देती है। छोटी रानी गर्भवती थी, जिसके एक पुत्र पैदा हुआ। बड़ा होने पर जब उसे वास्तविकता मालूम हुई तो वह राजा के दरबार में पहुँचा। राक्षसी उसे देखकर डर गयी तथा उसे मार डालने के उद्देश्य से अपनी माँ के पास भेजा। लेकिन राजकुमार ने अपनी चतुराई से राक्षसी की माँ को नानी बनाकर, उससे अपनी माताओं की आँखें प्राप्त कर ली। एक बार राजकुमार ने राक्षसी की माँ से सिन्दूर की दो डिब्बीयों को देख कर उनके बारे में पूँछा। राक्षसी की माँ बोली कि बेटा इन्हें छूना मत। इन डिब्बियों में मेरे तथा तेरी माँ (राक्षसी रानी) का प्राण है। एक दिन चुपचाप राजकुमार ने उन दोनों डिब्बियों को लेकर, उन्हें खोला। जिसमें माँ बेटी दोनों मर गयी। इस लोककथा में जड़–पदार्थों (सिन्दूर की डिब्बी) को प्राण–प्रतीक के रूप में इस्तेमाल किया गया है। 'सिंहलद्वीप की पद्मिनी' (10) नामक ब्रज की लोककथा में एक जादूगरनी राजकुमार को ही मक्खी बनाकर कैद कर लेती है।, जिसे ढूढ़ते–ढूढ़ते बजीर का लड़का परी रानी के बगीचे में पहुँचता है। आधीरात को वहाँ परीरानी आती है तथा बजीर के लड़के की विपदा समझकर उसे बतलाती है कि यहाँ से सौ योजन की दूरी पर एक जंगल है, उसमें तरह–तरह के हिंसक पशु रहते हैं। जहाँ ताड़ के पेड़ पर एक पिंजड़ा टंगा हुआ है, उसमें एक तोता बैठा है। उस तोते में जादूगरी की जान है, जिसने राजकुमार को मक्खी बनाकर कैद कर रखा है। बजीर का लड़का परी रानी की सहायता से जंगल में पेड़ के पास पहुँचता है तथा पिंजड़ा उतारकर तोते की गर्दन मरोड़ देता है। इधर तोते का मरना था कि जादूगरी का भी अन्त हो जाता है बजीर का लड़का जादूगरनी के घर पहुँचकर राजकुमार को पुनः मक्खी से आदमी बनाकर मुक्त करता है। इस लोककथा में तोते को प्राण–प्रतीक के रूप में प्रयोग किया गया है।

स्वयं संग्रहीत 'निपूता राजा' (11) बुन्देली लोककथा में, 'एक निपूते राजा के साधु द्वारा दिये गये फल से चार पुत्र पैदा होते हैं। इन पुत्रों में से साधु जेठे पुत्र को अपने पास रखने की शर्त रखता है। बड़ा पुत्र अपने घर के आँगन में आस का बिरवा लगाकर अपनी माँ से कहता है कि जब तक यह हरा रहे समझना मैं जीवित हूँ। जब यह मुरझा जाय तो समझना मैं मर गया। यह कहकर बड़ा पुत्र साधु के साथ जंगल में उसकी कुटिया में चला आता है। वह साधु नरभक्षी था, जिसने अनेक राजकुमारों को तेल से खौलते कड़ाह में पकाकर खा डाला था। लेकिन कुटिया के पास पड़े उन नर कंकालों द्वारा सावधान करने पर वह साधु को ही कड़ाह में फेंककर मार डालता है तथा वहीं तेल छिड़कर सभी राजकुमारों को जिलाकर, अपने घर को चल देता है। रास्ते में एक बुढ़िया के साथ जुआ खेलते हुए वह अपने को भी हार जाता है, जिससे बुढ़िया उसे अपनी कोठरी में बंदी बना

लेती है। कोठरी में बन्द कई दिनों तक भूखे प्यासे रहने पर बड़ा पुत्र काफी दुबला हो जाता है, जिससे उसके घर के ऑगन में लगा आस का बिरवा सूखने लगता है। अब छोटा पुत्र अपने बड़े भाई को ढूँढ़ने निकलता है। रास्ते में वही बुढ़िया जुला खेलने को आमंत्रित करती है। चतुर छोटा राजकुमार बुढ़िया से पासे बदलकर, उससे सब कुछ जीत लेता है। जिसमें उसका बड़ा भाई भी निकलता है, उसे नहला–धुलाकर उत्तम वस्त्र पहनाकर भोजन कराता है। जिससे घर में लगा आस का बिरवा पुनः हरा होने लगता है। फिर दोनों भाई सकुशल घर वापस आ जाते हैं। इस लोककथा में आस का बिरवा नायक के सुख–दुख की सूचना देने का काम करता है।

इस तरह की लोककथाओं में प्रायः परदेश जा रहे नायक के सुख–दुख, जीवन–मृत्यु की सूचना उसके घर वालों (विशेषकर माँ को) मिलते रहने के उद्देश्य से घर के आँगन में पौधा रोपा जाता है। माँ का अपने पुत्र के प्रति अत्यधिक ममत्वशील रहने के कारण उसकी भलाई के लिए आशान्वित रहना स्वाभाविक है, जिसके प्रतीकस्वरूप लोककथाओं में प्राण–प्रतीक के रूप में आस के बिरवा (पौधा) की कल्पना की गयी होगी।

'माता की विरासत' (12) नामक राजस्थानी लोककथा में पहले राजकुमार की कथा में अपने पिता द्वारा देश निकाला दिए जाने पर राजकुमार की मुलाकात अपनी माँ द्वारा उपकृत एक शक्तिशाली गाड़ीवान से होती है, जो अपने पास से दो फूल निकालकर, उनमें से एक फूल राजकुमार को देते हुए कहता है कि इसमें रोज सुबह फूँक मारना, जिससे तुम्हारे प्राण फूल में बस जायेंगे। जब तक कोई इस फूल को जला न डाले, तब तक तुम्हारे प्राण सुरक्षित रहेंगे। यदि कुछ अनहोनीं बात हो भी जायेगी तो गाड़ीवाले के पास का दूसरा फूल मुरझा जायेगा और उसे इसका पता चल जायेगा। आगे, राजकुमार एक राक्षस को मारकर उसके द्वारा बन्दी बनायी गयी सुन्दरी राजकुमारी के साथ विवाह कर लेता है। लेकिन उस राजकुमारी को पड़ोस का राजकुमार भी पाना चाहता है, जिसके लिए वह अपनी एक दासी को दूती के रूप में भेजता है। दासी अपने को राक्षस की बहन बताकर राजकुमारी के पास रहने लगती है। दूती राजकुमारी को फुसला कर उसके द्वारा राजकुमार के प्राण निहित फूल का रहस्य जान लेती है। राजकुमार के बाहर जाने पर दूती सैनिकों को बुलाकर राजकुमारी को बाँधकर तथा फूल को आग में झोंककर चल देती है। पर जल्दबाजी में फूल आग के बाहर ही गिरता है, तो भी उस पर आँच लगने से राजकुमार बेहोश होकर घोड़ें से गिर जाता है। उधर गाड़ीवाले ने देखा कि उसके फूल का रंग उड़ रहा है, वह दौड़कर वहाँ पहुँचा, तब तक फूल मुरझाने लगा था, गाड़ीवाले ने उसे पानी में डाल दिया, फूल हरा हो उठा और राजकुमार भी होश में आ गया। वह घोड़े पर सवार होकर तुरन्त महल पहुँच गया। आगे गाड़ीवान की की सहायता से राजकुमार राजकुमारी को पुनः प्राप्त कर लेता है।' इस लोककथा में प्रथम फूल को प्राण प्रतीक के रूप में तथा दूसरे फूल को आस का बिरवा (पौधा) की तरह प्रयोग किया गया है। इस तरह, इस लोककथा में नायक के दो प्राण प्रतीक है।

बुन्देली लोककथा 'स्वर्णकेशी' (13) में, राजकुमार के प्राण उसके तेगे में स्थित है। कथा इस प्रकार है– 'एक शरारती राजकुमार को देश निकाला मिलता है। वह अपने तीन अन्य मित्रों के साथ दूसरे राज्य में पहुँचता है। वहाँ वह दुकानदार से एक विशेष तेगा व उसके बनाने की विधि को दो हजार रूपये में लेता है। इस तेगा की विशेषता है कि यह अपने मालिक की रक्षा करने के साथ जब तक इसमें पानी (चमक) रहेगा, तब तक इसका मालिक जीवित रहेगा। लुहारमित्र को विशेष तेगा बनाने की विधि सीखने के लिए वहीं छोड़कर राजकुमार आगे बढ़ जाता है तथा विशेष तेगे की सहायता से वह एक दानव को परास्त कर उसकी सोने के बालों वाली सुन्दरी बेटी से विवाह करता है। दूसरे राज्य से भेजी गयी दूती के बहकाने पर बेटी राजकुमार से उसके प्राणो का पता पूँछती है। दूती पर सन्देह होने पर राजकुमार इस हिदायत के साथ कि मेरे मरने के बाद मेरी लाश सुरक्षित रखी जाय, अपने प्राणों का भेद बता देता है। अगले दिन जब राजकुमार शिकार को जाता है, दूती उस तेगे को आग में रख देती है, ज्यों–ज्यों तेगे का पानी उतरता है, राजकुमार की बेचैनी बढ़ने लगती है। वह शिकार खेलना छोड़कर तेजी से घर की तरफ आता है। लेकिन महल के पास आकर घोड़े से उतरते ही उसके प्राण पखेरू उड़ जाते हैं। राजकुमार का लुहार–मित्र, जो विशेष तेगा बनाना सीख लिया होता है, वहाँ जाकर उस विशेष तेगे पर पानी चढ़ाना शुरू कर देता है। जैसे–जैसे पानी चढ़ता है, राजकुमार के शव में प्राण आने लगता है। जब पानी पूरी तौर पर चढ़ जाता है तो राजकुमार पुनः जीवित हो उठता है। अन्त में अपने तीनों मित्रों की सहायता से स्वर्णकेशी को प्राप्त कर राजकुमार अपनी राजधानी सकुशल वापस लौट जाता है।

'तीन भाई' (14) बुन्देली लोककथा में, 'जादूगरनी की मृत्यु दुर्ग में रखी तलवार से बताई जाती है। यह तलवार इतनी भारी है कि किसी में भी शक्ति नहीं कि उसे उठा सके। लेकिन तीन घूँट विशेष पेय पदार्थ पीने से नायक में तलवार उठाकर घुमाने की शक्ति आ जाती है, जिससे वह जादूगरनी को मार देता है। 'महाभारत' में जरासंध वध के लिए भी एक विशेष प्रक्रिया अपनायी गयी थी। भीम जब जरासंघ से सत्ताइस दिनों तक लगातार युद्ध के बाद भी उसे परास्त नहीं कर सके, तो निराश होकर उन्होंने कृष्ण की ओर देखा। कृष्ण ने भीम की ओर देखते हुए नरकट हाथ में लिया और दातून की भाँति उसे दो टुकड़ो में चीरकर उन्हें विपरीत दिशाओ में फेंक दिया।

भीम ने संकेत पाकर ऐसा ही किया तथा जरासंघ को दो टुकड़ों में चीरकर विपरीत दिशाओं में उनको फेंक दिया, जिससे जरासंध की मृत्यु हो गयी। (15)

इस कथाभिप्राय से सम्बन्धित लोककथाओं के अध्ययन से यह बात स्पष्ट होती है कि जीवन–निमित्तों (प्राण–प्रतीक) का प्रयोग राक्षस, जादूगर, डायन आदि दुष्ट पात्रों के साथ राजकुमार आदि सज्जन पात्रों के लिए भी किया गया है। जीवन–निमित्त–वस्तुओं का अध्ययन करने पर पता चलता है कि जड या चेतन कोई भी वस्तु जीवन–निमित्त हो सकती है। इनके चुनाव के संम्बध में प्रायः इस बात का ध्यान रखा जाता है कि वह अविनाशी या दीर्घकाल तक बना रहने वाला हो। अपेक्षाकृत लम्बी आयु वाले पक्षियों तथा कीट आदि का चुनाव इसी आधार पर किया जाता है। साथ ही निमित्त की लघुता को भी ध्यान में रखा जाता है, क्योंकि अत्यंत लघु होने पर ही उसे कई वस्तुओं के भीतर छिपाकर रखा जा सकता है और अपनी छुटाई के कारण ही उसे आसानी से प्राप्त भी नहीं किया जा सकता। पक्षी और कीट लोक–कथाओं के सबसे प्रिय 'जीवन–निमित्त' है, जिनका प्रयोग प्रायः दुष्ट पात्रों के प्राण–प्रतीक के रूप में मिलता है। दुष्ट पात्रों को दण्ड देने के उद्देश्य से पक्षियों, यथा–तोता, बुलबुल आदि को सरलता से गर्दन मरोडकर मारा जा सकता है और उनके अंग–भंग द्वारा अधिकारी पात्र का अंग–भंग करके कौतुहल, हास्य और चमत्कार भी उत्पन्न किया जा सकता है। पुष्प पौधे आदि नाशवान और क्षणभंगुर जीवन–निमित्तों का चुनाव प्रायः राजकुमार आदि कथा के नायक पात्रों के लिए मिलता है। इन पुष्प पौधों की चेतनता को बनाये रखकर नायक के प्राणों की रक्षा की जा सकती है। इसी तरह तेगा, तलवार आदि जड़ वस्तुओं को इसलिए जीवन–निमित्त के रूप में रखा जाता है ताकि नायक को पुनः जीवित किया जा सके।

जीवन–निमित्त (प्राण–प्रतीक) वस्तु को छिपाकर रखे गुप्त स्थान की जानकारी नायक को दो तरह से होती है–(I) कुछ कथाओं में प्रत्यक्ष रूप से उस स्थान को दिखला दिया जाता है। नायक को उस निमित्त की सूचना देन वाला पहले से ही किसी प्रकार इस रहस्य से परिचित होता है, जो (प्रायः राक्षस की कैद में सुन्दरी नायिका) नायक से सहानुभूति रखने के कारण उसे इस रहस्य को बतला देता है। (2) कुछ कथाओं में छलपूर्वक उस निमित्त के अधिकारी से ही सभी प्रकार की सूचनाएं प्राप्त कर ली जाती हैं, प्रायः अधिकारी व्यक्ति के प्रति अधिक महत्व और स्नेह का प्रदर्शन करके उस गुप्त निमित्त की जानकारी प्राप्त कर ली जाती है।

इस तरह, 'प्राणों की अन्यत्र स्थित' लोककथाओं का बहुत ही प्रिय व प्रचलित अभिप्राय है। अनेक लोककथाओं का तो यह केन्द्रीय–अभिप्राय (सेन्ट्रल मोटिफ) होता है। लोककथाओं में नायक के साहसिक एवं चमत्कारपूर्ण कार्यों द्वारा कथानक को रोमांचक बनाने, कौतूहल तथा आश्चर्य की प्रतिष्ठा के लिए इस अभिप्राय पर आधारित वर्णनों की योजना बराबर होती रही है। सच तो यह है कि लोककथाओं में इस अभिप्राय का अध्ययन बहुत ही मनोरंजक और ज्ञानवर्द्धक है। इसमें दुष्ट पात्र को उसके किये की सजा मृत्यु के रूप में मिलती है तथा सज्जन पात्र अपने अभीष्ट को प्राप्त कर सुखपूर्वक जीवन–यापन करते हैं।

lEidZ % 5] Vhpl Z gke] fo'ofo|ky; dEil] vkxjk&282002

lUnHkZ xzUFk&lwph %&

1. हिन्दी साहित्य कोश (भाग एक), सम्पा0–धीरेन्द्र वर्मा, पृष्ठ–748.
2. हमारी लोककथाएँ: शैली और स्वरूप, मरूभारती, सम्पा0 डॉ0 कन्हैया लाल सहल, वर्ष–10, अंक–3, अक्टूबर 1962 ई0, पृष्ठ–60
3. "The Motif is the smallest recognizable element that goes to make up a complete story." (Dictionary of world literature, Joseph T. Sheplay, Page-166)
4. "It is the incident in a story which froms the real guide to its history and migration." (The Ocean of story, N.M.Panzer, Vol-I Page-29)
5. The Ocean of story, Panzer, Vol-I, Page-129.
6. महाभारत (द्वितीय खण्ड), अनुवादक–साहित्याचार्य पंडित रामनारायण दत्त शास्त्री पाण्डेय 'राम', गीता प्रेस गोरखपुर, 1966 ई0, वन पर्व, पृष्ठ–1329
7. कथासरित्सागर (प्रथम खण्ड), अनु0 पं0 केदार नाथ शर्मा 'सारस्वत', जटाशंकर झा एवं प्रफल्ल चन्द्र ओझा, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना, 1960 ई0, द्वितीय लम्बक, तृतीय तरंग, पृष्ठ–167–169 तक
8. स्वयं संग्रहीत 'डाइन की कथा', कथक्कड़ देवीदीन, संग्रह क्रमांक–33, अप्रकाशित
9. स्वयं संग्रहीत 'अंधरी का बेटा', गिरिजा देवी, संग्रह क्रमांक–34, अप्रकाशित
10. पुण्य की जड़ हरी, आदर्श कुमारी, पृष्ठ–53–54 तक
11. स्वयं संग्रहीत 'निपूता राजा', गिरिजा देवी, संग्रह क्रमांक–10, अप्रकाशित
12. चौबोली रानी, लक्ष्मी निवास विड़ला, पृष्ठ–56–60 तक
13. बुन्देलखण्ड की ग्राम्य कहानियाँ, शिव सहाय चतुर्वेदी, हिन्दी ज्ञान मंडल लिमिटेड, बम्बई, 1947 ई0, पृष्ठ–76–84 तक
14. तीन भाई, श्रीदेव, 'मधुकर', सम्पादक–बनारसीदास चतुर्वेदी, श्री वीरेन्द्र केशव– साहित्य परिषद, टीकमगढ़, अंक–6, 15 दिसम्बर 1940 ई0, पृष्ठ–9
15. महाभारत (प्रथम खण्ड), सभापर्व, पृष्ठ–736 व 737।